शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन

शोधकर्ता
निवेदिता साहू
एम.एड. छात्रा
प्रगति महाविद्यालय, रायपुर

शोध निर्देशक
डॉ कमल नारायण गजपाल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
प्रगति महाविद्यालय, रायपुर

भूमिका

शिक्षक किसी भी राष्ट्र का मुख्य स्तंभ होता है। जो चाहे तो राष्ट्र की कायाकल्प कर सकता हैए जिसका कार्य उत्तम समाज एवं नागरिको का निर्माण करना होता है। इसका उदाहरण हम अपने प्राचीन समाज से ले सकते है। जिसमें एक शिक्षक अपने विद्यार्थी को नागरिक बनाने में सहयोग प्रदान करता है। चूंकि शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव जीवन का विकास उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा व्यक्ति का विकास करती है और परिकृष्ट भी करती है। जन्म के समय बालक अपनी मूल प्रवितियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उसकी व्यवहार की उसके आचरण की उसके क्रियाकलापों को उचित और समाज उपयोगी बनाती है। वर्तमान में शिक्षा हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकता बन गई है। यह हमारे जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक अमूल्य साधन हैण और शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली गत्यात्मक प्रक्रिया हैण जिसके द्वारा बौदधिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास होता हैए जो मानव जीवन को सफल बनाती है। अतः यह ज्ञान की अविरल धारा है जो मनुष्य को पशुता से दूर करती है शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास दवारा उसके व्यवहार में परिवर्तन लाही है जो देशए समाज तथा विश्व के कल्याण के लिए आवश्यक है। हमारे समाज में वैदिक.कालीन भारत में गुरू का स्थान सम्मानीय था और आज भी है। शिक्षक मानव विकास उसके ज्ञान से होता है। ज्ञानए कला कौशल बुद्धि

व्यापार से परिवर्तित किया जाता है। और उसे सभ्य एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। विद्यालय प्रत्येक नागरिक भूमिका निर्माण में विद्यालय को शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षकों का अच्छा व उचित कार्य राष्ट्र की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करा है। अतः इसके लिए आवश्यक है कि रिखको का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहे तथा अध्याप जीवन से संबंधित जीवन मूल्यों को अपनाकर विद्यालय देश तथा राष्ट्र के विकास की ओर ले जाकर एक सम्मानीय स्थिति प्रदान कर सकें क्योंकि कुशल जीवन में संपादन में मानसिक स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण स्थान है। मानसिक रूप से स्वास्थ्य शिक्षक की एक विशेषता है।व्यक्तिगत, व्यावसायिक विशेषता प्रजातंत्रात्मक मनोवृत्ति निष्पक्षता व स्वस्थ मनोवृत्ति पाठ्यत्तर क्रिया में अभिरूचि शिष्टाचार, स्पष्टवादिता, उत्तरदायित्व की चेतना, विषयवस्तु प्रवीणता आदि विशेषताओं को बनाये रखने के लिए अध्यापको को अपने जीवन मूल्य को अपनाना व संचारित भी करना अति आवश्यक है। अतः अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य व जीवन मूल्य एक ही सिक्के के दो पहलू है जो विद्यार्थी देश, राष्ट्र, समाज को सही राह प्रशस्त कर सकेंगे क्योकि शिवाक विद्यालय में व्यवस्थापक, संस्थापक, सहयोगी, दार्शनिक व संरक्षक है। इन्हीं के द्वारा विद्यालय की व्यवस्था संचालित होती है।

शैक्षिक प्रक्रिया के प्रमुख संचालक के रूप में शिवाक का स्थान अवश्य ही केन्द्रित है। यह न केवल अपने मौखिक शब्दों द्वारा वरन अपनी रूचि अभिरुचि, आचार विचार, रहन-सहन और अन्य मानव तत्वों द्वारा छात्रों पर गहरा प्रभाव डालता है। सत्य यह है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में छात्रों पर प्रभाव डालने वाला शिक्षक के समान कोई दूसरा तत्व नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक के जीवन मूल्यों के संबंध हो। प्रभावशाली एवं कम प्रभावशाली शिक्षकों की पहचान जरूरी है। शिक्षक के जीवन मूल्यों के संबंधों को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक है जिनका अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। छात्र देश और राष्ट्र की संपत्ति है। उनके शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास का दायित्व शिक्षक का होता है।

इस पद के महत्व को देखते हुए गुणी आत्मविश्वासी प्रतिमा सपन्न अनुभवी व्यक्ति का होना आवश्यक है। जिसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक मानसिक स्वास्थ व जीवन मूल्यों से परिपूर्ण रहे जीवन मूल्य का महत्व बताते हुए केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड ने बताया कि जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को स्थान मिलना चाहिए। जिससे बालक का यहुंओर विकास हो सके क्योंकि शिक्षण में जीवन मूल्यों का समावेश होने से शिक्षण में निष्पक्षता

नियमितता, निष्ठा, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सृजनशीलता आती है। भारत अपनी कला संस्कृति दर्शन आदि की गौरवशाली परम्परा पर सदैव गर्व करता रहा है पर आज पारस्परिक अविश्वास के कारण प्राधीन मूल्य धूमिल हो रहा है। आज हम विदेशी चिंतन प्रणाली अपनाने में लग गए जिससे हमारे मूल्य दब गए इन्हें फिर से समाज देश राष्ट्र में लागू करने के लिए अध्यापक ही यह केन्द्र बिन्दु है। जिसे साथ लेकर हम वापस अपने जीवन मूल्यों को अपना सकेगें अतः अध्यापक व विद्यार्थी के मूल्यों में धनिष्ठ संबंध है।

शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा:-

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ उसका वास्तविक अर्थ नहीं हो सकता है। क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि जो किसी शब्द का शाब्दिक अर्थ हो वहीं उसका बास्तविक अर्थ हो, शिक्षा का संकुचित अर्थ भी उसका वास्तविक अर्थ नहीं हो सकता वस्तुतः शिक्षा का वास्तविक अर्थ शिक्षा को संकुचित अर्थ और व्यापक अर्थो के समन्वय में निहित है। दोनों अर्थों के समन्वय से शिक्षा एक प्रक्रिया ही जाती है। जो बालक की व्यक्तिगत योग्यताओं, क्षमताओं और रूचियों को ध्यान में रखकर उसका मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास करती है और उसके विचार व्यवहार में ऐसा परिवर्तन करती है। जो स्वयं उसके अपने तथा समाज राष्ट्र और संपूर्ण विश्व के लिए हितकर होता है।

शिक्षा की परिभाषाएँ:-

भारतीय विचारकों के अनुसार:-

1. उपनिषद्:-शिक्षा वह है जिसका अन्तिम साध्य मुक्ति है।

2. स्वामी विवेकानंदः-शिक्षा मानव में निहित दैवी पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

3. महात्मा गांधीः-शिक्षा से मेरा अभिप्राय, बालक तथा मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में अंतनिर्हित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण विकास से है।

मूल्यों का अर्थः-

मानव जीवन में अधिगम की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती है। नवजातशिशु समयोपरान्त जब अपने परिवेश से परिचित होने लगता है तो वहीं से उसके सीखने की प्रक्रिया आरंभ होती है। बाल्याकाल से किशोरावस्था तक के काल में मनुष्य की अधिगम की क्षमता ती होती है। इस अवस्था में उसे अपने भविष्य की चिन्ता होती है। भविष्य को उज्जवल सुखमय बनाने के लिए यह फूल मुल्यौ का निर्धारण करता है। इस समय बालक को नीव जैसे दूवता आधार प्रदान करने में मूल्य अहम भूमिका निभाते है। जीवन की विकास की प्रक्रिया में उसे अच्छे-बुरे प्रिय-अप्रिय अनुभव प्राप्त होते हैं। कभी सफलता तो कभी असफलता मिलती है। इन अनुभवों में सार्थक, उपयोगी अनुभवों को ग्रहणकर वह स्थायी मूल्य की स्थापना कर लेता है।

मूल्यों की परिभाषाएँः-

प्लेटो के अनुसारः- ‘ ‘शिक्षा एवं उसके शाश्वत मूल्यों से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों के द्वारा मानव में अच्छे जीवन आदर्श का विकास और नैतिकता का विकास करती है। ‘ ‘

मुनरो के अनुसारः- ‘ ‘मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होते रहते है। ‘ ‘

मूल्यों के प्रकार

स्पेनर ने 1928 ने छ प्रकार के मूल्य बतलायें हैं-

1. सौन्दर्यारत्नक मूल्य

2. धार्मिक मूल्य

3. कलात्मक मूल्य

4. राजनैतिक मूल्य

5. आर्थिक मूल्य

6. सैद्धांतिक मूल्य

मूल्यों की प्रकृति

मूल्यों की प्रकृति का विवरण निम्नानुसार है-

1. मूल्यों के द्वारा समाज एवं संस्कृति की पहचान होती है।

2. मूल्य व्यक्ति के आचरण की निर्देशित करता है।

3. मूल्य समाज के व्यवहार मानक होते हैं।

4. मूल्यों का विकास अनुकरण एवं आत्मसात करने से होता है।

5. धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं द्वारा मूल्यों का विकास होता है।

अध्ययन का महत्व:-

मूल्यों का संबंध मानव जीवन की अभिव्यक्ति से है। मानव जीवन में मूल्यों की आवश्यकता, महत्व अनिवार्यता व अपरिहार्यता जरूरी है। साकि वह अपने परिवार के साथ-साथ सामाजिक दायित्व को निभा सके। मूल्य सामाजिक जीवन को सुगम एवं विस्तृत बनाती है। वैदिक मंत्रों में मूल्यों को विशेष महत्य दिया गया है। मूल्यों के न होने से अनेक समस्या का सामना करना पड़ सकता है।समस्या यह प्रश्न होता है निरी प्रकासंबंधी को प्रधानकी की जाती है।

शोध समस्या एक ऐसी समस्या होती है जिसकी या दो से अधिक धरों के बीच एक प्रश्नात्मक संबंध की अनियति होती है।

मैक्युइन:-''एक समस्या ऐसा प्रश्न है जिसका तरी सामान्य क्षमताओं प्रयोग से दिया जा सकता है। ' '

आज के भौतिकवादी युग में शिक्षा का भौतिक सामग्री जुटाने की कला से आवगत कराना हो गया है समाज एवं परिवार भी इसी भौतिकवादी दृष्टिकोण से अधिक प्रभावित होते जा रहे हैं। नैतिक मूल्यों का महत्व कहीं खोता जा रहा है। मानव धर्म के बुनियादी मूल्य, शांति सौहाद, सहिष्भुता, प्रेम, स्नेह के भाव कमजोर होते जा रहे हैं। यह

बदलाव हमारे लिये चिन्ता और विमान दोनों का विषय है।उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए लघु शोध प्रबंध हेतु शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन समस्या का बयन किया गया है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन:-

भारत में किए गए शोध अध्ययन:-

विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा जो अध्ययन किया गया है. उन ज्ञानकोषों की संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास कया गया-

* सिद्धाना, अशोक कुमार एवं पारीक, एम. (1997)ने जवाहर नवोदय विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की वृति उनके मूल्यों पर उनकी दबाव बस्तता एवं लिंग भेद एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पढ़ने वाले प्रभाधी का अध्ययन विषय पर शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि नवोदय विद्यालय में कार्यरत अध्यापको की वृत्ति एवं मूल्यों पर उनकी दबावग्रस्तता, लिंग भेद एवं अन्ह क्रिया के प्रभाव के संबंध में कार्यस्त अध्यापकों के किसी भी मूल्य पर दबावग्रस्तता का प्रनाव सार्थक नहीं पाया गया। कार्यरत अध्यापको के किसी भी मूल्य पर लिंग भेद का प्रभाव नहीं पाया गया।

* गुर्नानी, एल. (1998)ने राजस्थान सीनियर हायर सेकेण्डरी स्कूल के शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों के जीवन मूल्य व्यक्तिगत व सृजनात्मकता के अध्ययन विषय पर अपना शोधकार्य करके निष्कर्ष में पाया कि शारीरिक रूप से विकलांग छात्र धार्मिक प्रजातांत्रिक तथा अपितु सृजनात्मक छात्र धार्मिक प्रजातांत्रिक तथा अधिक सृजनात्मक थे। शारीरिक रूप से विकलांग छात्र कल्पनाशील जीवन मूल्यों युक्त व सौम्य प्रवृत्ति के पाये गए।

*सिंह, अजित (2000) ने मूल्य संकट माध्यमिक स्तर पर मूल्य शिक्षण नामक विषय पर शोध कार्य किया तथा निष्कर्ष प्राप्त किया कि बहुद्देश्यीय शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से मूल्य शिक्षा को और प्रभावी बनाया जा सकता है। साथ ही उन्होंने पाया कि शिक्षक के मूल्यों का छात्र पर अक्षय प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक की भूमिकाओं को प्रभावित करती है।

*दूबे, चन्द मावेश (2003)ने मानवीय मूल्यों व सामाजिक विकास हेतु शिक्षण तथा शिक्षण व्यवस्था में बदलाव आवश्यक है। विषय पर पी एच. डी. शोध कार्य में निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि शिक्षण में ज्ञानत्मक मावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षी के सभी वर्गों का शिक्षण किया जाए अर्थात् व्यवहार केन्द्रित शिक्षण हो जिसके मूल्यांकन से पता चला कि इस प्रकार के शिक्षण से मानवीय मूल्यों में वृद्धि होती है।

*राजपूत, विशेष कुमार सिंह (2000)ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नैतिक मूल्यों का अध्ययन शीर्षक शोध में पाया कि नैतिक गुल्यों के विकास में शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव नहीं पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि मूल्यों के विकास के लिए उत्तरदायी अनेक कारण है जो समग्र रूप से प्रभाव डालते है।

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन:-

* डिवामे, डी. सारणेन (1996)ने विद्याथिको मूल्य जाने वाली प्रवेशिकाओं का तुलनात्मक अपयन पी. एच डी स्तरीय शोधकार्य करके अपने निष्कर्ष के रूप में पाया कि चीनी विद्यार्थी मूल्यों के प्रति ज्यादा सजग थे। जबकि अमेरिकी विद्यार्थियों की सोध उन घटनाली और चरित्रों पर ज्यादा थी की उन्हें अपनी पंसदीदा पाठ्यसामग्री को पढ़ने का आनन्द देती थी। फिर भी दोनों देशों के विद्यार्थियों ने मूल्यों को आत्मसात किया, जिनमें ईमानदारी कठिन परिश्रम उपलब्धि आदि प्रमुख थे।

* रिजवी, हैदर (2007)ने उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्राओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन शीर्षक पर पी-एव. डी. स्तरीय शोध कार्य कर निष्क निकाला की छात्राओं के विभिन्न मूल्यों के स्तर में कोई समानता नहीं पाई जाती । भातीय परम्परागत मूल्य मुख्यतः धार्मिक सौन्दर्यात्मक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित होते है तथा छात्राओं में इन तीनों मूल्य श्रेणियों का स्तर निम्न पाया गया। सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य, शीर्ष सहर यह धाये गाये।

*निफेडकर, सुशील वाम (2000)किया और निभा पाया कि पुन मूल्यांकन एक भावनियामक दिशा से सामाजिक समायोजन से और सभायोजन की सामाजिकते समाधीजन से ऋणात्मक संबंधती है।

* हार्रिन्स, जेड एवं अन्य (2011)ने समायोजन और छोटे समूहों में नेतृत्वका उदय शीर्षकराजकार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि समायोजन और होता है योग्यता का उपयोग अबोध और सनयोजन दिने सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

* मार्टिन, रॉबिन एवं अन्य सदस्य (2012)ने सामाजिक मुखानुक परिदान और कार्य के नये तरीके और समायोजन शीर्षक पर शोधकर्ता ने एक प्रोफाईल तैयार किया। इन्होंने अपने प्रोफाइल में 15 शोधार्थियों को शामिल किया जो इस क्षेत्र में शोध थे। इन्होंने इन शोधों के प्राप्त निकों के आधार पर बताया कि सामाजिक सुरक्षा वर्तमान जगत का एक महत्वूपर्ण भाग है। सामाजिक जीवन में कार्य के परिवर्तन के साथ ही रामायोजन होता है।

समस्या का कथन:-'' सरकारी व गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मूल्यों अध्ययन ' ' शोधकाने उक्त समस्या पर अध्ययन करने का विचार किया। प्रस्तुत अधुशोध को अंतर्गत सरकार छात्र-छात्राओं के मूल्यों का किया जा रहा है। समस्या कर सुनान करते समय शोधकर्ता ने इस बात का ध्यान रखा है कि सार के विद्यार्थियों में मूल्यों का सार्थक अंतर है अथवा नहीं। इस बात को ध्यान १ रखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य हेतु उपयुक्त समस्या का बदन किया है।

प्रकार्यात्मक परिभाषा:-

*शासकीय - विद्यालय यह संस्था जिसे सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त हो अतः कार्य भार सरकार द्वारा संभाला जाता है।

*अशासकीय विद्यालय - गैर सरकारी विद्यालय स्वतंत्र विद्यालय का अशासकीय विद्यालय होते हैं। को केंद्र तथा राज्य सरकार के अधीन संचालित नहीं होते है।

*मूल्य - मूल्य एक प्रकार का मानक है, मनुष्य किसी वस्तु क्रिया, विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाने या त्याग दे। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में निर्णात्मक ढंग से आता है तो वह मूल्य कहलाता है।

अध्ययन का उद्देश्य:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

1.गैर शासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।

2.शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के छात्र एवं छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना।

3.शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओ के मूल्यों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना:- किसी घटना की बाख्या करने वाला कोई सुझाव या अलग प्रतीत होने वाली बहुत सी घटनाओं के आपसी संबंध की व्याख्या करने वाला कोई पूर्ण सुझाव परिकल्पना कहलाता है। प्रस्तुत शोध के लिए निम्न परिकल्पना निर्मित की गई है-

1.परिकल्पना H1-गैर शासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं को मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

2.परिकल्पना H2 -शासकीय एवं शासकीय उच्चतर मध्यमिक विद्यालयों के छात्रों मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

3.परिकल्पना H3- शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमा:-

अध्ययन का परिसीमन से तात्पर्य समस्या के व्यापक रूप को एक सीमा में बाधना है क्योंकि व्यापक क्षेत्र में अध्ययन कठीन व अधिक खर्थीला होगा।

प्रस्तुत समस्या के लिये परिसीमांकन निम्न प्रकार से किया गया है

1.प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले का चयन किया गया है।

2.प्रतुत अध्ययन में रायपुर जिले के शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।

3.प्रस्तुत अध्ययन के लिये उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

4.प्रस्तुत अध्ययन में छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है।

5.प्रयनित विद्यार्थियों में 60 शासकीय एवं 60 की विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

6.मूल्य मूल्य एक प्रकार का माननुष्तु किवर विचार पूर्वनिर्णयकता है कि वह या त्याग है। जब विचार व्यक्ति के मन में नियामकी आता है ती वह मृत्य कहलाता।

शोध प्रविधिः-

सर्वेक्षण विधिः-जिस शोध का उदेश्य तात्कालिक परिस्थितियों का अध्ययन वर्णन एवं व्याख्या करना है। तो उसके लिये सर्वेक्षण विधि उपयोगी है। सर्वेक्षण विधि का उपयोग किसी क्षेत्र में निश्चित प्रकार के तथ्यों की जानकारी प्राप्त कि जाती है, तो सर्वेक्षण को उसी का नाम दे दिया जाता है - जैसे - सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक।

जॉन, डब्लू बेस्ट (1959 पृ.152) ने सर्वेक्षण विधि का वर्णन प्रधान एवं व्याख्या मूलक प्रकृति को रेखांकित करते हुए कहा है कि ‘‘यह विधि वर्ममान स्थिति का वर्णन एवं व्याख्या करती है, यह मौजूदा परिस्थितियों तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों से सम्बन्धित है। ‘ ‘

1.प्रस्तुत अनुसंधान में न्यादर्श अधिक संख्या में लिये गये है, जिसके लिये सर्वेक्षण विधि सर्वोतम है।

2.प्रस्तुत अनुसंधान का सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर सम्पूर्ण न्यादर्श की सामान्यीकरण सांख्यिकी ळें उपर्युक्त अध्ययन के लिये ‘‘सर्वेक्षण विधि ‘ ‘ का अनुसंधानकार्ता ने उपयोग किया है।

जनसंख्याः-

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान हेतु रायपुर शहर के तीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें दो शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों को लिया गया, जिसमें जनसंख्या के अन्तर्गत प्रत्येक उच्चत्तर माध्यमिक

सारणी क्रमांक 1.1

चयनित शासकीय विद्यालय की सूची

क्र	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं	कुल विद्यार्थी
1.	प. गिरजा शंकर मिश्र शा. उच्चतर माध्य. शाला रायपुरा	10	10	20
2-	शा. उच्तर माध्यमिक शाला, पं. रविशंकर शुक्ल परिषद	10	10	20
3-	शा. उच्चतर माध्यमिक शाला, डगनिया	10	10	20
	योग	30	30	60

सारणी क्रमांक1.2

चयनित अशासकीय विद्यालय की सूची

क्र	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं	कुल विद्यार्थी
1.	पं. सुदर लाल शर्मा	10	10	20
2-	बिन्दा सोनकर	10	10	20
3-	सरस्वती शिशु मंदिर	10	10	20
	योग	30	30	60

न्यादर्श:-

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। क्योंकि यादृच्छिक शोध विधि के माध्यम प्रशासन मे सुविधा और आंकड़ों के एकरूकता से बचा जा सकात है। प्राप्त परिणामों में अंतर स्पष्ट किया जा सकात है।

प्रस्तुत शोध न्यादर्श के रूप् में रायपुर जिले के शासकीय और अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को यादृच्छिक चयन द्वारा चुना गया जो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का प्रतिनिधित्व करते है।

चर:-

(क) स्वतंत्र चर -मूल्यों का अध्ययन ।

(ख) आश्रित चर -शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थी।

उपकरण:- प्रस्तुत अध्ययन में आकड़ों के संकलन के लिए प्रमाणीकृत उपकरण जिससे छात्रों के मूल्यों परीक्षण के संबंध को मापने हेतु आर. के . ओझा तथा डॉ महेश भार्गव द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत उपकरण '' मूल्य परीक्षण मापनी ' ' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण:- प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं को परीक्षण एवं विवेचना हेतु प्रमाप विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना क्रमांक 1

अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्रओं के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 4.1

अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का विद्यार्थियों की संख्या , माध्य, प्रमाणिक चिलन एवं क्रांतिक अनुपात के लिए सारणी

चर	विद्यार्थियों की संख्या	माध्य	प्रमाणविचलन	t मूल्य	सार्थक/सार्थक नहीं
छात्र	30	261.36	16.02	0-1825	05 स्तर पर सार्थक नहीं
छात्राएं	30	260.68	20.91		

df = 58

व्याख्या:-

अशासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र व छात्रओं की संख्या 50- 50 में परीक्षण किया गया जिसमें अशासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालय के छात्रों का प्राप्तांकों का माध्य 261.36 व प्रमाण विचलन 16.02 प्राप्त हुआ तथा अशायकीय स्कूल के उ.मा विद्यालयों की छात्राओं का प्राप्तांकों माध्य 260.68 व प्रमाण विचलन 20.91 प्राप्त हुआ है। अशाकसीय स्कूल के उ.मा. विद्यालय के छात्र व छात्राओं का माध्य में अंतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। 58 क िके लिए 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 0.18 है जो क्रांतिक अनुपात के गणना मूल्य के अधिक है। इस प्रकार दोनों छात्र व छात्रओं के मूल्यों के प्राप्तांकों का अंतर सार्थक नहीं है।

आरेख क्रमांक 4.1

अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का विद्यार्थियों की संख्या, माध्य एवं प्रमाणिक विचलन के लिए

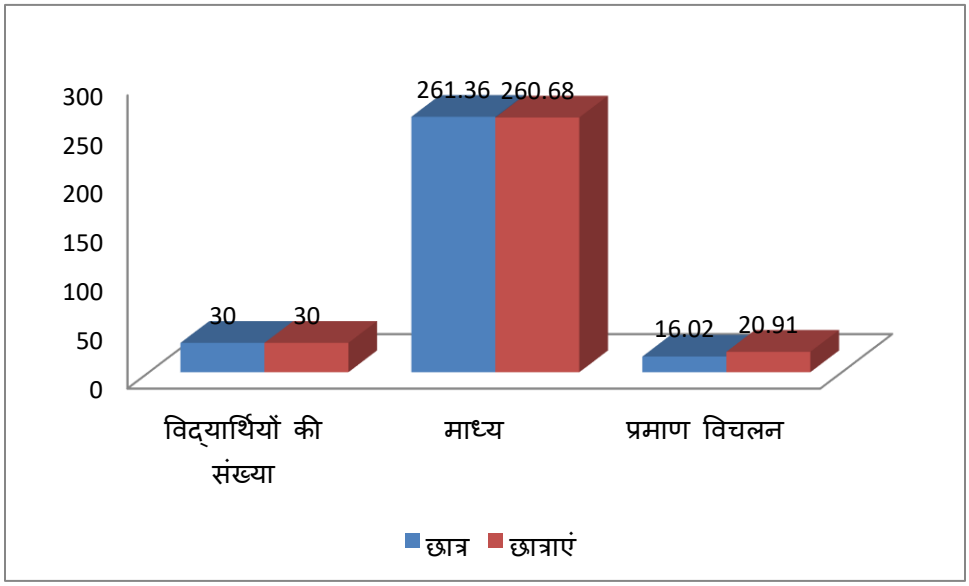

निष्कर्षः- अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक 2 -

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों मे सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 4.2

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मूल्यों का विद्यार्थियों की संख्या, माध्य, प्रमाणिक विचलन एंव क्रांतिक अनुपात के लिए सारणी

चर	विद्यार्थियोंकीसंख्या	माध्य	प्रमाणविचलन	t मूल्य	सार्थक / सार्थक नहीं
शासकीयछात्र	**30**	**273.98**	**12.39**	3.2002	**05 स्तर पर सार्थक नहीं**
अशासकीयछात्र	**30**	**261.36**	**16.02**		

व्याख्या:-

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संख्या 30-30 में परीक्षण किया गया जिसमें शासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालय के छात्रों का प्राप्तांकों का माध्य 273.98 व प्रमाप विचलन 12.39 प्राप्त हुआ तथा अशासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालयों की छात्रों का प्राप्तांक माध्य 261.36 व प्रमाण विचलन 16.02 प्राप्त हुआ है। शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालय के छात्रों का माध्य में अतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। 58 क ि के स्तर पर सारणी मूल्य 3.20 है जो क्रांतिक अनुपात के गणना मूल्य से कम है। इस प्रकार दोनों उ.मा. विद्यालयों (शासकीय एवं अशासकीय) छात्रों के मूल्यों के प्राप्तांको का अंतर सार्थक है।

आरेख क्रमांक 4.2

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं के मूल्यों का विद्यार्थियों की संख्या, माध्य, प्रमाणिक विचलन के लिए आरेख

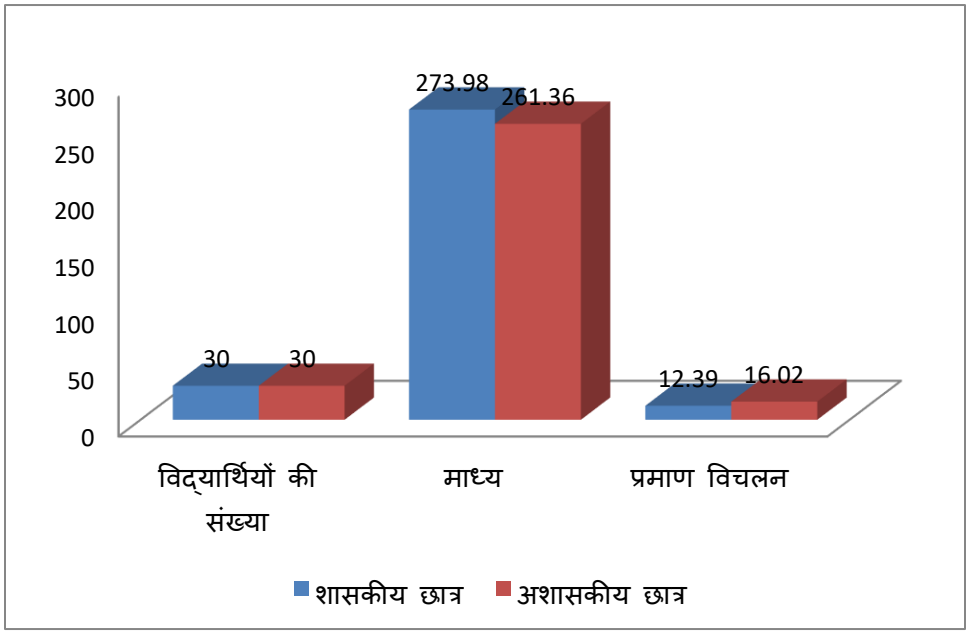

निषकर्ष:-" अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H3 .

' 'शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। ' ' अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी क्रमांक 4.3

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं के मूल्यों का विद्यार्थियों की संख्या, माध्य एवं प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपान के लिए सारणी

चर	छात्राओंकीसंख्या	माध्य	प्रमाणविचलन	CR मूल्य	सार्थक/सार्थक नहीं
शासकीयछात्राएं	**30**	**272.74**	**16.52**	**4.407**	**05 स्तर पर सार्थक अंतर है।**
अशासकीयछात्राएं	**30**	**260.68**	**20.91**		

df = 58

व्याख्या:-

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चत माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संख्या 30-30 में परीक्षण किया गया, जिसमें शासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालय के छात्रों का प्राप्तांकों का माध्य 272.74 व प्रमाण विचलन 16.52 प्राप्त हुआ तथा अशासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालयों की छात्राओं का प्राप्तांक माध्य 261.678 व प्रमाण विचलन 20.91 प्राप्त हुआ है। शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उ.मा. विद्यालय के छात्राओं का माध्य में अंतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। 58 क िके के लिए 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 4.407 है जो क्रांतिक अनुपात के गणना मूल्य से कम है। इस प्रकार दोनों उ.मा. विद्यालयों (शासकीय एव अशासकीय) छात्रों के मूल्यों के प्राप्तांकों का अंतर सार्थक है।

आरेख क्रमांक 4.3

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रोओं के मूल्यों का विद्यार्थियों की संख्या, माध्य एवं प्रमाणिक विचलन के लिए आरेख

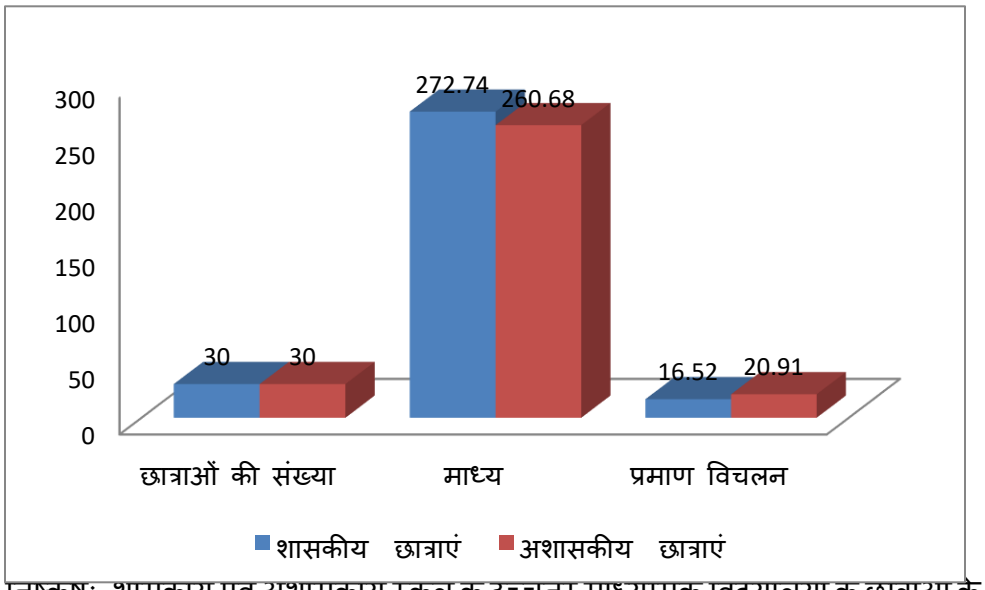

निष्कषः- शासकाय एव अशासकाय स्कूल क उच्चतर माध्यामक विद्यालया क छात्राआ के मूल्यों के सार्थक अंतर पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत है।

निष्कर्ष:-

परिकल्पना क्रमांक 1-

अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

निष्कर्षः-

अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक 2-

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के चाओं के मूल्यों में अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक 3-

शासकीय एवं अशासकीय स्कूल के उब्बतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

निष्कर्षः-शासकीय एवं अशासकीय स्कूल को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई।

सुझावः-

1. मूल्यों के विकास हेतु प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति करना चाहिए।

2. समाज में रुढिवादिता को दूर कर आधुनिकता को अपनाना चाहिए।

3. अभिभावकों में लडकी लड़के की पढ़ाई मिन्नत को दूर कर समानता अपनाना चाहिए।

4. परिवार व विद्यालय का वातावरण मूल्यों के आदर्श संबंधी समायोजित करने हेतु छात्र-छात्राओं को दिशा निर्देशन करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1.ओझा, आर. के (1971) '' मूल्यों का अध्ययन ' ' हिन्दी संस्करण, आगरा, नैशनल साइकोलाजिकल कार्पोरेशन

2.कपिल, एच. के. (2005) ''अनुसंधान विधियां ' ', आगरा, हर प्रसाद भार्गव प्रस्तुक प्रकाशन

3.चौबे, सरयू प्रसाद (2005) ''शिक्षा के समाजशास्त्री आधार ' ', आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, पृ.सं. 299-300

4.जैश्री (2007) ''मूल्य पर्यावरणा और मानव अधिकार की शिक्षा ' ', पृ.सं. 1-30

5.पचौरी, गिरीश (1996) ''शिक्षा का अर्थ प्रकृति, अंग तथा आधार,'' शिक्षा सिध्दांत

6.परिहार, पी.सी. (1976) ''अध्यात्मिक मूल्यों पर अध्ययन सेकेन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन ' '

7.पाण्डेय, राजेश कुमार (2005) ''शिक्षा के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति वाले जनजातीय विद्यार्थियों के मूल्य ' ' जनरल ऑफ एजुकेशल स्टडीज, वाल्यूम-3, पृ.सं. 27-29

8.पाण्डेय, सुषमा (2005) ‘‘शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में मूल्य संवर्धन के प्रति दृष्टिकोण ‘ ‘ जनरल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, वाल्युम-3, पृ.सं. 64

9.पाठक, पी. डी. (2003) ‘‘शिक्षा मनोविज्ञान ‘ ‘, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर

10.भारती एवं माथुर प्रीति (2000) ‘‘कार्यरत एवं अकार्यतर महिलाओं के मूल्यों पर अध्ययन ‘ ‘, प्राची जनरल ऑफ साइकोकल्चरल डाईमेन्सन, वाल्यूम-16, नं.1

11.द्विवेदी, ए.एन (2005) ‘‘ग्यारहवी कक्षा के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन ‘ ‘ जनरल ऑफ एजुकेशन स्टडिज, वाल्यूम 3

12.रामशकल पाण्डेय (2001) ‘‘मूल्य शिक्षण ‘ ‘,विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा